IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

युवा शक्ति और राष्ट्रीय एकता मे डॉ.एस.एन.सुब्बाराव का योगदन: एक अध्ययन।

सुनील कुमार

पीएचडी रिसर्च स्कॉलर, इतिहास और पुरातत्व विभाग, एमडीयू रोहतक, हरियाणा

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र मे गाँधी वादी विचारक और अपने आचरण से गाँधी के विचारो का दृढ़ता के साथ स्थापित कर डॉ.एस.एन.सुब्बाराव ने राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं सद्भभावना को मजबूत करने हेतु पूरे देश के लाखो नौजवानों को प्रेरित किया है। चम्बल घाटी मे विकास और देश के निर्माण मे उनके अमूल्य योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। नई दुनियाँ के संपादकीय मे लिखा था- सुब्बाराव का नाम भारत से पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक एक ऐसे अनूठे व्यकतित्व के रूप मे जाना जाता है जिसने लाखो लोगो के रचनात्मकता को गाँधी वादी धारा से जीवंत रूप से जोड़ा। वे जब अपने अभियान और जागरण का भारतीय रूप लेकर जन-जन के बीच निकलते है तो लगता है मानो सेवा साधना शांति एवं प्रेम का एक चलित तपोवन उनकी यात्रा मे शरीक है। सुब्बाराव ने आत्मपरिवर्तन की यात्रा में कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओ मे फुट पड़ने के बाद सुब्बाराव ने दोनों गुटों से संबंध बनाए रखे और देश की युवा शक्ति को निर्देशन कर राष्ट्रीय एकता बनाने में योगदान किया। अंधकार से प्रकाश की और में सुब्बाराव ने चम्बल घाटी में अहिंसा के बल पर डाकुओ के ह्रदय परिवर्तन कर शांति स्थापित कि। नवभारत के निर्माण के लिए डॉ.एस.एन.सुब्बाराव ने राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना कर देश के कोने-कोने मे शिविर लगा कर युवाओ को दिशा निर्देशन किया। राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने व कोई झगड़ा न हो दंगा न हो भाई जी द्वारा प्रेरित नौजवान भारतवर्ष में फैले है या कहे भाई जी शांति के सिपाहियों को प्रशिक्षण युवा शिविरों के माध्यम से देशो के उदाहरण जो भाषा- धर्म के नाम पर टूट गए ऐसा भारत में ना हो। देश में राष्ट्रीय एकता बनी रहे इसके लिए सुब्बाराव ने प्रयास किये है।

मुख्य शब्द:- सुब्बाराव, युवाशक्ति, राष्ट्रीय एकता।
उद्देश्य:-सुब्बाराव द्वारा किये गये कार्यो को उजागर करना।
शोध विधि - व्याख्यात्मक शोध विधि।
परिचय:- डॉ. एस .एन.सुब्बाराव

बहुअयामी व्यक्तित्व युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत , राष्ट्रीय एकता ,और सदभावना को मजबूत करने के लिए देश-विदेशो मे नौजवानों को प्रेरित करने वाले महान गाँधी वादी डॉ.एस.एन.सुब्बाराव ने कर्म और ज्ञान का समन्वय करके युवा शक्ति के माध्यम से जन- कल्याण का मार्ग चुनकर अपने लक्ष्य में अपार सफलता प्राप्त की है। सुब्बाराव का जन्म 7 फरवरी 1929 ई ० को बंगलौर में एक मध्यम परिवार में हुआ।[1] इनके पिता श्री नंजुद्य्या सुब्बाराव एक ईमानदार प्रतिष्ठित वकील थे। सुब्बाराव 10 वर्ष की उम्र में अपने भाईयों के साथ मल्लेश्वर के रामकृष्ण वेदान्त कॉलेज में गीता, उपनिषद् के भक्ति गीत गाने लगे। 9 अगस्त 1942 को सुब्बाराव खादी का कुर्ता पहनकर स्कूल गये।[2] जब उनकी कक्षा लगी हुई थी तब दो युवा उनकी कक्षा मे घुस आये और कहने लगे आप यहां क्या कर रहे हो ? हमारे सभी राष्ट्रीय नेताओ को सरकार ने गिरफ़्तार कर लिया है चलो हम भी भारत माता की जय बोलते है। तब सभी विधार्थी उन युवाओ के साथ बाहर आ

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

गये। भारत माता की जय, वन्देमातरम् और महात्मागांधी जी की जय के नारे लगा रहे थे।[3] सिपाहियों ने उन्हे पकड़ लिया और हवालात में डाल दिया , लेकिन कम उम्र होने के कारण सुब्बाराव को दो घंटे बाद छोड़ दिया। उसी दौरान सुब्बाराव के मन में विचार आया की ," मुझे देश के लिए कुछ करना चाहिए।" [4]

आगे चल कर सुब्बाराव ने मित्रो के साथ मिलकर 'छात्र कांग्रेस ' में सक्रिय रूप से भाग लिया। 'हिंदुस्तानी सेवा दल' प्रतिबंधित होने पर ' राष्ट्रीय सेवा दल का गठन किया और सेवा दल के नये संगठन के सिलसिले में एक दर्जन शिविरो की श्रृंख्ला आयोजित करने में सुब्बाराव ने सक्रिय भूमिका निभाई। सुब्बाराव की इच्छा थी कि वह डॉ० हार्डिकर से मिले। यह इच्छा उनकी 1948 मे ' चित्रदुर्ग ' में आयोजित शिविर के माध्यम से डॉ० हार्डिकर के निकट सम्पर्क में आये। डॉ० हार्डिकर ने एस.एन.सुब्बाराव में वह तेज देखा जो आगे चल कर उनकी कमान संभाल सकता था।[5] सुब्बाराव उन दिनों कॉलेज का नियमित विद्यार्थी था। बाद में 'मैसूर सेवा दल' का नाम बदल कर भारत सेवा दल 'रख दिया गया, जिनके तत्वाधान में सुब्बाराव ने उनके शिविरों का आयोजन किया और उनके सदस्यों को अभिप्रेरित किया। डॉ० हार्डिकर के कहने से सुब्बाराव सन 1951 में 'अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल 'का काम करने के लिए दिल्ली आ गये।[6] लेकिन इस से पहले वह वकालत की पढ़ाई पूरी करना चाहते थे। दिल्ली में कांग्रेसी कार्यकर्ताओ के साथ पुरे देश भर में सुब्बाराव ने कैडर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये।

पंडित जवाहर लाल नहेरु और कांग्रेस के अन्य बड़े नेता उनकी संगठन कुशलता से बहुत प्रभावित हुए। सुब्बाराव अपने मित्र के साथ 1952 में चम्बल घाटी गये जो उस समय मध्य भारत में 'सेवा दल के इंचार्ज' श्री वृंदावन सिंह तोमर थे।[7] बाद में विनोबा भावे जी के भू-दान आंदोलन के दौरान 1964 में चम्बल घाटी मुरैना में पहला शिविर का आयोजन डॉ. एस.एन .सुब्बाराव ने किया।[8] इसके बाद चम्बल घाटी में शिविरों की श्रंखला शुरू हो गई। यहां पर युवा देश के कोने-कोने से आये और यहां की परिस्थितियों से अवगत हुए तथा इस क्षेत्र में शांति स्थापित करने में सहयोग किया। संविधान में उल्लेखित सभी भाषाओ का ज्ञान बहुत कम लोगो को होगा। लेकिन सुब्बाराव को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान उनके समय में उनकी पीठ पर लगा पोर्टेबल टाइपराइटर ही बता देता था वे हॉफ पैंट और शर्ट पहने दोनों कंधो पर नीले रंग के दो थैले सुब्बाराव की अपनी अलग ही पहचान थी।[9] उनका मानना था कि," एक थैला आवास है, और दूसरा कार्यालय।"[10]

जब तमिलनाडु निवासी श्री कामराज कांग्रेस के अध्यक्ष बने तो सुब्बाराव की ख्याति में चार चांद लग गए। कामराज उत्तरीय राज्यों से लेकर गुजरात से नागालैंड आदि राज्यों तक घूमे तो कामराज के भाषणो का हिंदी अनुवाद करने के लिए सुब्बाराव उनके साथ यात्रा करते थे। इस सयोंगिक मौके से सुब्बाराव को तीन बड़े लाभ हुए - (1) वे बड़े पैमाने पर लोगो की निगाह में आ गए। (2) समूचे देश के कोने-कोने में उनका सम्पर्क हो गया। (3) देश की प्रक्रति को नजदीक से जानने का मोका सुब्बाराव को मिला। 1969 मे महात्मा गाँधी का जन्म शताब्दी वर्ष था। इस उपलक्ष्य में समूचे देश में गाँधी दर्शन प्रदर्शनी रेलगाड़ी एक वर्ष तक घुमाई और सुब्बाराव ने इस रेलगाड़ी में काम करने का लिए अनेक स्वयंसेवको को प्रेरणा दी। सुब्बाराव को इस रेलगाड़ी का निर्दशक बनाया गया और इसी वर्ष गाँधी शताब्दी समारोह समिति का जन सम्पर्क मंत्री मनोनीत किया गया। इसका कारण यह था कि वे देश-विदेश की भाषाओं को जानते और आकर्षक तन - मन के मालिक थे।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

सुब्बाराव कांग्रेस सेवा दल के वातावरण में अल्प समय में ओत-प्रोत हो गए। जब कभी किसी को गाँधीवादी सिद्धांतो का उल्लंघन करते हुए देखते तो निस्सकोंच सम्बन्धित व्यक्ति को उसकी सीमाएं समझाने से नहीं चूकते थे चाहे उस व्यक्ति का कांग्रेस दल या सरकार में कोई भी स्थान क्यों न हो। श्री लाल बहादुर शास्त्री के दुःखद निधन के उपरान्त श्री मती इंदिरा गाँधी देश की प्रधान मंत्री नियुक्त हुई। उनके इस पद पर सुशोभित होते ही प्रधान मंत्री की कार्य शैली में कई परिवर्तन आ गए, जो लोक चर्चा का विषय बन गए। 1970 में नेताओं को आपस में विवादग्रस्त देख कर सुब्बाराव को दुःख होता था। ऐसे ही कांग्रेस का विभाजन हो गया। श्रीमती इंदिरा गाँधी और श्री एस. निजलिंगप्पा , जो कांग्रेस का विभाजित गुटों के नेता को पत्र लिखकर सूचित किया कि मैं दोनों से सम्बन्ध बनाए रखना चाहता हूँ। अंतः सुब्बाराव ने 1970 में कांग्रेस सेवा दल छोड़ दिया और गाँधी शांति प्रतिष्ठान ' में आजीवन सदस्य के रूप में शामिल हो गया। गाँधी शांति प्रतिष्ठान सुब्बाराव 500 रुपये प्रतिमाह देगा।

इसके लिए सुब्बाराव देश में (कभी-कभी विदेश मे) गाँधीवादी गतिविधियों को चलाए। यह व्यवस्था आज तक जारी है । 27 सितम्बर ,1970 चम्बल घाटी में गाँधी प्रदर्शनी रेल यात्रा में शामिल युवाओ से एकत्रित 6071 रुपये एक छोटी सी धनराशि से औपचारिक रूप से कुछ स्थानीय महामान्य नागरिको और सहयोगियों की उपस्थिति में गाँधी सेवा आश्रम जौरा' की स्थापना की।[11] सुब्बाराव ने आश्रम में रहकर चम्बल घाटी मे 34 पहुँच मार्ग के स्थानीय लोग और शिविरों में आये युवाओ के सहयोग से श्रमदान के माध्यम से बनाये। 14 अप्रैल 1972 को यह आश्रम ' बागी आत्म-समर्पण ' के लिए विख्यात हुआ।[12] सुब्बाराव के प्रयास से बटेश्वर (उत्तरप्रदेश) और तालाबशाही (राजस्थान) के बागियों ने भी आत्मसम्पर्ण किया। 1976 से 1980 तक आश्रम के जरिये भाई जी ने कई विकास कार्य किये। इस दौरान चम्बल घाटी के मोधना जवाहर और बागचीनी गाँव मे राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित किये जिसमे 15000 युवक - युवतियों ने भाग लिया। गाँधी आश्रम जौरा द्वारा खादी एवं ग्रामोधोग , युवा नेतृत्व शिविर , रोजगार प्रशिक्षिण , आदिवासियों को संघन प्रशिक्षण , आदिवासी बच्चो की शिक्षा , ग्रामीण युवा प्रेरक एवं संगठन निर्माण प्रशिक्षण आदि गतिविधियाँ आश्रम में होती थी। 25 दिसंबर 1984 से 9 अप्रैल 1986 बाबा आमटे की ऐतिहासिक भारत जोड़ो यात्रा में सुब्बाराव अधिकांश समय सहभागी हुए और अनेक युवाओं को यात्रा में सहभागिता हेतु प्रेरित किया।[13]

चम्बल घाटी मे शांति स्थापित होगी लेकिन देश के अन्य भागो में साम्प्रदायिक दंगो की आग दहकने लगी। मानव विकास मंत्रालय ने सुब्बाराव को स्वामी विवेकानंद भाषण के शताब्दी पर कुछ करने की योजना के लिया कमेटी में शामिल किया। दोबारा ऐसा समय आया जिस भाई जी ने सद्भावना रेल यात्रा निकाली और इसमे पुरे भारत वर्ष के लोगो ने भाग लिया। सद्भावना रेल यात्रा के माध्यम से स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गाँधी एवं विनोबा भावे के आदर्शवादी विचारो को फैलाया। यह यात्रा 1993 -94 -95 में भारत सरकार के सहयोग से सदभावना रेल ने देश की हर दिशा में भ्रमण किया। डॉ.एस.एन सुब्बाराव ने अपने जीवन में मानवीय सेवा और युवाओ को दिशा निर्देशन के लिए गाँधी आश्रम जौरा में युवा कार्यकर्ताओ में सुब्बाराव ने सहयोगियों के साथ मिलकर राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। डॉ.एस.एन.सुब्बाराव गीत , संगीत और भारीतय संस्कृति के उपासक थे। वे सभी भारतीय भाषाएँ जानते थे और राष्ट्रीय एकता शिविरों में सर्वधर्म प्रार्थना सभा तथा राष्ट्रीय एकता गीत सुनकर युवाओ में एक विचार और व्यवहार का उद्घोष होता है। सुब्बाराव का मानना था कि," देश में चारो तरफ आज सैकड़ो योजनाए चल रही है। अनुमान है कि उनकी व्यवस्था खर्च 7 प्रतिशत से अधिक है।"[14]

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

यदि इन योजनाओ का एक प्रतिशत भी युवा शिविरों के द्वारा युवाओ की भागीदारी पर खर्च किया जाए तो बडा काम होगा। सुब्बाराव के युवा एकता और श्रमदान शिविरों की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि इसमें अधिकांश ग्रामीण युवक -युवतियां भाग लेती है तथा शहरी -मध्यमवर्गीय और सुविधा सुरक्षा के जाल में फंसे युवक इधर कम आते है। जब सुब्बाराव किसी सभा को सम्बोधित करते थे तो उस से पहले कोई भजन या देश भक्ति का गीत वे स्वयं तो गाते ही साथ मे सुनने वालो को भी साथ गाने के लिए कहते थे। के० सी० रेड्डी , पूर्व राज्यपाल ने सुब्बाराव के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा था, '' जब कभी मन में निशाशा होती है तब श्री सुब्बाराव हमारे लिए आशा की एक किरण के रूप में दिखाई देते है और हमें विश्वास होने लग जाता है कि जब तक इन जैसे व्यक्तित्व इस देश मे मौजूद है। हमे निराश होने कि आवश्यकता नहीं तथा भारत का भविष्य उज्जवल है।"[15] 1957 में सोवियत रूस,1958 में बर्लिन और 1960 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित विश्व युवा सम्मेलनों में सुब्बाराव ने भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया था ।

सुब्बाराव विश्व भर में घूमे है - अमेरिका , इंग्लैंड, जर्मनी , कनाडा , सिंगापुर आदि देशो में उन्होने युवा शिविरों का संचालन किया। सर्वधर्म सभा ' शिकागो में स्वामी विवेकानन्द के भाषण शताब्दी समारोह के मौके पर सुब्बाराव ने 1993 में इस पर अपनी वार्ता प्रस्तुत की। [16] 1999 में दक्षिण अफ्रीका में हुए ' सर्वधर्म विश्व ससंद के सम्मलेन में भाग लिया। पूरी दुनिया में डॉ० सुब्बाराव साथियों के बीच 'भाई जी' के नाम से प्रसिद्ध थे। राष्ट्रीय सम्मान पदमश्री से विभूषित डॉ० सुब्बाराव को 1995 मे राष्ट्रीय युवा पुरस्कार ,2003 में राजीव गाँधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार 2006 में जमनालात बजाज पुरस्कार, 2014 में कर्नाटक सरकार की ऊपर से महात्मा गाँधी प्रेरणा सेवा पुरस्कार और नागपुर 2014 में ही राष्ट्रीय सद्भावना एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था 1997 में डी० लिट् मानद उपाधि काशी विधापीठ वाराणसी एवं 2002 में विश्वमानवधिकार प्रोत्साहन पुरस्कार मिला। गाँधीवादी विचारक व समाज परिवर्तक स्वाधीनता संग्राम सैनानी और चम्बल को डकैतों से मुक्त कराने वाले डॉ० सलेम नंजुद्य्या सुब्बाराव का 92 वर्षायु में 27 अक्टूबर 2021 को जयपुर स्वामी मान सिंह अस्पताल में गुरुवार को अंतिम सांस ली।[17] सुब्बाराव को शासन - प्रशासन के कई दिग्गज अपना आदर्श मानते है। उनके निधन पर तमाम दिग्गजो ने शोक जताया।

2 आत्म परिवर्तन की और मेरी यात्रा :-

सुब्बाराव अधिकारिक रूप से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सेवा दल प्रभाग में कार्य करते थे। सुब्बाराव कांग्रेस के अध्यक्षो के भाषण का अनुवाद करते थे। 1964 ई० के बाद गाँधी शताब्दी संघठन से जुड़े और गाँधी वादी कार्यक्रमो में भाग लेना शुरू किया। भाई जी ने सेवाग्राम के गाँधी शताब्दी शिविरों के अतिरिक्त असम ,मणिपुर , उतर-प्रदेश आदि राज्यों में शिविरों का आयोजन करके हजारों युवाओ को गाँधी वादी कार्यक्रमो के लिए प्रेरित किया। गाँधी जी से सम्बन्धित रेल प्रदर्शनियो का कार्यक्रम 1970 में समाप्त हो गया। इस दौरान सुब्बाराव को गाँधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ० आर० आर० दिवाकर का पत्र मिला , जिसमे सुब्बाराव को गाँधी शांति प्रतिष्ठान का आजीवन सदस्य मनोनीत किया गया। 1970 में कांग्रेस पार्टी के शीर्षस्थ नेताओ में आपसी फुट पड़ गई और कांग्रेस पार्टी के दो भाग हो गये। यह सब देखकर सुब्बाराव मन से बड़े दुःखी हुए।

सुब्बाराव ने कांग्रेस के विभाजित गुटों के नेताओ को पत्र लिख सूचित किया कि," मैं दोनों से सम्बन्ध बनाये रखना चाहता हूँ। अत: मुझे दोनों गुटों से इस्तीफा देने की आज्ञा दीं जाए। [18] 1969 -70 से कांग्रेस

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

तथा भारत का इतिहास ही बदल गया। सुब्बाराव ने सेवादल में कार्य करते हुए यह अनुभव किया कि सभी भारतीयों को जाति , धर्म तथा भाषा के विभेदो से दूर रहकर एकता बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए। गाँधी शांति प्रतिष्ठान में पहुंचने के बाद भाई जी ने अपने विचारो में नई दिशा जोड़ दी। हमे दलगतो के भेदों को भुलाकर इसके लिए अभिन्नता, एकता का प्रचार करना चाहिए। सुब्बाराव का अखण्ड विश्वास था कि मानव जाति में एकता स्थापित होने पर राष्ट्रों की सीमाएं समाप्त होकर विनोबा जी के 'जय - जगत' अभिवादन का सही स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और गाँधी दर्शन ने सुब्बाराव को आंतरिक भावना प्रदान की और विभिन्न सामाजिक संगठनो ने उन्हे समाज की सेवा करने का अवसर प्रदान किया। जैसे - जैसे साल बितते गए , इस विश्वास की पुष्टि होती गई कि, "व्यक्तित्व के संतुलित विकास के लिए , एक व्यक्ति को विकास के दोनों पहलुओ को आकार में रखने की जरूरत है- आद्यात्मिक विकास और दुसरो की सेवा।"[19] इस दो तरफ़ा दृष्टिकोण ने सुब्बाराव को एक संतुष्ट व्यक्ति बनाने में बहुत योगदान दिया है।

3 अधंकार से प्रकाश की और:-

चम्बल घाटी के डाकुओ (बागी) के जीवन की बारीकी से जाँच करने पर पता चलेगा कि लोगो के इस तरह के जीवन को अपनाने का मूल कारण पैसे के लालच नहीं बल्कि - गरीबी, अन्याय समूहवाद है, उन्हें उन लोगो द्वारा न्याय से वंचित किया गया जो आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से खुद से बेहत्तर थे। यह महत्वपूर्ण है कि सभी कुख्यात डाकू अपनी युवावस्था में अपने व्यापार में लग गए, मान लिजिए उनकी उम्र 20 या 25 के बीच होगी। चम्बल घाटी स्वर्ग हो गई होती यदि वहा के युवा अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यो में लगा सकते है, यह देश के अन्य हिस्सों पर भी लागु होता है। क्योंकि इस क्षेत्र में शांति सबसे जरूरी आवश्यकता है, यह प्रस्तावित है कि युवाओ को एक 'शांति सेना ' बनानी चाहिए। तनाव के पहले संकेत पर युवा गाँवो में रचनात्मक कार्य करेंगे और पार्टियों के बीच मध्यस्था करेंगे, क्योंकि चम्बल घाटी में केवल छोटे झगडे ही अंतत; बड़ी प्रतिदन्तिता का कारण बनते है। महात्मा गाँधी रेल प्रदर्शनियों के निर्देशक के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए उन्हें कुछ पैसे मिले तो उनको लगा कि पैसे गाँधी वादी काम के लिए जाना चाहिए। 1970 में उत्तर - मध्य भारत चम्बल घाटी देश में सबसे अधिक हिंसा प्रभावित हिस्सा था। इसलिए यहा आश्रम की स्थापना कर शांति को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र में कई युवा शिविरों का आयोजन किया डाकुओं का ह्रदय परिवर्तन कर 654 डाकुओं ने आत्मसमपर्ण का श्रेय भी डॉ.एस.एन. सुब्बाराव को दिया है। भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत ने सुब्बाराव जी के बारे में कहा था - सुब्बाराव ने जब चम्बल के डाकुओं को सम्पर्ण कराया तो मैं व्यक्तिगत रूप से भी उनका ऋणी बन गया था।[20] सुब्बाराव के सामने एक बार जिस गाँव में डाकुओं का समर्पण हुआ , वह पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी की जन्म भूमि भी है।

4.नवभारत निर्माण में करे योगदान:-

सुब्बाराव जी कहते थे, मुझे याद है, 14 अगस्त 1947 की वह रात जब सभी लोग मिलकर भारत के लोग एक नव जाग्रति में प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। [21] वह बहुत ही रोमांचित कर देने वाली घडी थी रात्रि के बारह बजते ही वायसराय हाउस पर तिरंगा झंडा फहराया जा चूका यहां जिसे बाद में राष्ट्रपति भवन के नाम से पहचाना गया। संसद भवन , हाई कोर्ट , सुप्रीम कोर्ट सभी प्रमुख इमारतों पर तिरंगा झंडा लहरा रहा था। इस प्रकार एक स्वतंत्र भारत का नया अध्याय शुरू हुआ। स्वतंत्र भारत का नागरिक बनने के बाद यह आवश्यक हो जाता है कि हम स्वतंत्र नागरिक का अर्थ जान ले। स्वतंत्र नागरिक के अर्थ है कि," वह झूठ नहीं बोलेगा, बेईमानी नहीं करेगा, दूसरे नागरिको को हानि नहीं पहुँचाएगा। [22] क्या वर्तमान में हम

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

सभी स्वतंत्र नागरिक के रूप में जी रहे है? यदि नहीं तो हम इस बात का मंथन करे और विश्लेषण करे कि हम एक स्वतंत्र नागरिक के रूप में कैसे अपने देश की सेवा कर सकते है ? डॉ.एस.एन सुब्बाराव ने पूरी ईमानदारी के साथ राष्ट्र और समाज की सेवा की है। विज्ञानं प्रगति के युग में भी सादगी भरा जीवन जीते हुए असाधारण कार्य भाई जी ने किये है।

युवाओ को भाई जी के जीवन से संदेश लेना चाहिए और नये भारत के निर्माण के प्रति संकलिपत और प्रतिबद्ध हो। वर्तमान में विज्ञानं की अनिवार्यता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। विज्ञानं के बिना हम टेलीविजन , मोबाइल फ़ोन , लैपटॉप , कंप्यूटर नहीं देख सकते थे , हम चन्द्रमा , मंगल ग्रह व अन्य की जानकारी नहीं ले सकते थे और परमाणु बम भी शायद नहीं बनता। बहुत सारे चमत्कार विज्ञानं ने हमको दिये है। इतना सब होने के बाद विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन कहते थे कि , विज्ञानं की अपनी एक सीमा है , विज्ञानं कई प्रकार की बीमारियों को इंजेक्शन से दूर कर सकती है , लेकिन ऐसे किसी इंजेक्शन का निर्माण अभी तक विज्ञानं नहीं कर पाया है कि एक बेईमान व्यक्ति को ईमानदार बनाया जा सके।"[23] काश ऐसा कोई इंजेक्शन आता तो सभी राजनेताओ को इंजेक्शन देकर व्यवस्थाओ में ईमानदारी स्थापित की जा सकती है। आइंस्टीन ने यह भी कहा है कि ,"जब विज्ञानं की सीमा समाप्त हो जाती है, वहां से आध्यात्म आरंभ होता है।"[24] डॉ० सुब्बाराव कहते थे ध्यान देने योग्य बात यह है कि ,"आध्यात्म का अर्थ सिर्फ हिमालय पर जाकर तपस्या करना या देवालय में जाकर दिये लगाना नहीं है। वास्तव में जिस वक्त अंदर से ईमानदार होने का भाव जागृत हो तो यह आध्यात्म है। जिस वक्त हमें दुसरो की पीड़ा खुद में महसूस होने लगे तो समझिए यह आध्यात्म है।"[25] यदि सभी में यह भाव जागृत हो कि हमारे आस-पास कोई बच्चा अनपढ़ ना रहे , सभी चरित्रवान बने , कोई भूखा ना रहे तो ऐसा भाव मन में आना ही अपने आप में आध्यात्म है। डॉ.एस.एन.सुब्बाराव के प्रेरक व्यक्तित्व को देखते हुए सभी युवा मन से यह प्रण ले कि वे प्रतिदिन 'एक घण्टा देह को और एक घण्टा देश को 'अवश्य दे। जब सभी युवा स्वस्थ होंगे तो निश्चित रूप से वे स्वयं के लिए और देश के लिए बहुत कुछ कर सकते है। इस प्रकार से देश भी एक उन्नत राष्ट्र के रूप में दिखाई देगा।

5. भारत की भिन्नता में एकता:-

दुनिया में 223 राष्ट्र है और संयुक्त राष्ट्र संघ में 192 राष्ट्र सदस्य है। 15 अगस्त 1947 को भारत आज़ाद हुआ। इसके बाद दुनिया के 110 राष्ट्र आज़ाद हुए। ऐशिया, दक्षिण अफ्रीका , पुरे अफ्रीका खंड में 52 देश आज़ाद हो गये। जो - जो आज़ाद हुए उनका कोई नेता रहा होगा। केनिया दक्षिण अफ्रीका के 'श्री नेल्सन मण्डेला' हुए। उन्होंने सब लोगो के साथ मिलकर के किताब लिखी है। इन सब लोगो ने लिखा है ,"हमको प्रेरणा भारत, महात्मा गाँधी से मिली , भारत आज़ाद हो गया न बंदूक, न बाण चलाया , किसी को मारा नहीं प्यार शांति और अहिंसा से आज़ाद हो गया तो हमको लगा , हम क्यों न आज़ाद हो जाए? ये सभी मानते है कि हमको प्रेरणा भारत से मिली है।"[26] जब भारत देश आज़ाद हुआ उसके बाद करीब 110 राष्ट्र दुनियां के आज़ाद हुए और सब 'सयुंक्त राष्ट्र संघ ' तक पहुँच गए है। आधा सयुंक्त राष्ट्र संघ भारत की आज़ादी के बाद आज़ाद हुआ है। डॉ.एस.एन.सुब्बाराव को एक बार 'सयुंक्त राष्ट्र संघ' में बोलने का मोका मिला तो उसमे 1400 प्रतिनिधि थे। सयुंक्त राष्ट्र संघ के बहुत बड़े हाल में सदस्य राष्ट्र सीढ़ी से A B C में बैठते है , जैसे A की तरफ से अल्जेरिया ,ऑस्ट्रेलिया और अंतिम कोने में Z आता है, जिम्बाब्वे। सुब्बाराव सयुंक्त राष्ट्र संघ में बोलते हुए सोच रहा था । चीन बहुत बडा राष्ट्र, अमेरिका बहुत बड़ा पैसे वाला राष्ट्र और यूनाइटेड किंग्डम हमारे देश पर 200 साल तक शासन कर गया। आधे-आधे सब बैठे है लेकिन इनमें से कोई देश भारत जैसा नहीं है। जुल्फिकार अली भुटटो ने अपनी पुस्तक में लिखा कि भारत

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

पाकिस्तान के मुकाबले में बहुत विविधता से भरा हुआ राष्ट्र है। यह तो निःसंदेह है, आप हिंदुस्तान में तमिलनाडु जायेंगे तो इटली खाना पड़ता है , पंजाब में जाएंगे तो पराठा खायेंगे, बंगाल में जायेंगे तो और कुछ खाने को मिलेगा।

लेकिन पाकिस्तान में एक ही खाना वहां तो नॉन मिलेगा, तंदूरी मिलेगा और कपड़े में कितना फर्क है , भारत में केरल वाला कुछ पहनता है तो पंजाब वाला कुछ और हमारे संविधान में 18 भाषाएं है और 'सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन लैंग्वेजेस' जैसे संगठन है उनके पास हिंदुस्तान की एक हजार 652 मातृभाषाओं के नाम है , तो पाकिस्तान के मुकाबले भारत भिन्नता से भरा देश क्यों है।"[27] पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए तब भुटटो वाक्य लिखते है - हम सब ने बहुत मना किया अलग मत जाओ 'हिन्दू -मुस्लिम, सिक्ख ,ईसाई ,पारसी , जैन 'सब एक साथ रहेंगे। लेकिन उन्होने कहा नहीं हिन्दुओ के साथ हमारी निभेगी नहीं और कुछ हिन्दू भी ऐसे निकले जो, बाग़ जाओ , निकल जाओ का समर्थन कर रहे थे तो दुर्भाग्य से अलग राष्ट्र बन गया। उन्होंने अपने राष्ट्र का नाम 'इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान' रखा। [28]पाकिस्तान मुस्लमानों का राष्ट्र बन गया और उसके टुकड़े हो गये। एक ही धर्म था फिर वह टुकड़े कैसे हुए? संविधान में 6 भाषाएँ थी , उर्दू , पंजाबी , सिंधी , बांगला, बंगाली वाले बहुत सारे थे। एक धर्म का मेरा पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गये। भारत में इतने धर्म है , फिर भी एक बना हुआ है। चार धर्म हिन्दू , जैन , बौद्ध और सिख यहीं पैदा हुए है । बहुत लोगो को पता नहीं है कि दुनिया में सबसे ज्यादा मुसलमान इण्डोनेशिया में दूसरे नम्बर पर भारत में। भारत का तीन राज्य तो ईसाई बाहुल्य है -नागालैंड , मिजोरम , मेघालय। करीब 70 प्रतिशत लोग यहां पर ईसाई रहते है।

भारत धर्म की दृष्टि , भाषा की दृष्टि , खान - पान की दृष्टि और रहन - सहन की दृष्टि से भिन्न है। भुट्टो जैल में बैठे -बैठे सोचता है मेरे पाकिस्तान का दो टुकड़े हो गये और भारत अभी भी एक बना बैठा है । युगोस्लाविया में तीन भाषाएँ थी आज तीन टुकड़े हो गए है। न जाने कितने नौजवानो ने युगोस्लेविया में एक रोड बनाने के लिए भेजा था। (मार्शल टीटो और पंडित जवाहर लाल नेहरू जिगरी दोस्त थे। उन्होंने नौजवानो से पूछा तुमने बनाई है , सड़क। क्या नाम रखना है तो नौजवानो ने कहा हम चाहते है 'यूनिटी फ्रेटरनिटी हाईवे' इसका नाम रखे। एकता भ्रात - भाव का हाईवे बनाये।[29] इतनी सुन्दर सड़क को 77 देशो के नौजवानो ने मिलकर बनाया। आखिर में कहा -युगोस्लोविया एक नहीं हो सकता है । एक -एक भाषा का एक -एक टुकड़े बना दो। हमारे पड़ोसी श्री लंका में चार धर्म है , बौद्ध , हिंदु , ज्यादा है , ईसाई और मुस्लिम। लेकिन हमने अख़बार में पढ़ा नहीं 10 साल में कही हिंदू और बौद्ध लड़ रहे हो। लेकिन 10 साल की लड़ाइयों में करीब -करीब 70 हज़ार लोग मारे गये है , श्री लंका में दो ही भाषा 'तमिल और सिंघली 'दोनों भाषाओ की लड़ाई ख़त्म नहीं हो पा रही थी। रोज खबर आती थी मर गये , वो मर गये। डॉ.एस.एन.सुब्बाराव कहते है , भारत के लोगो को सोचना होगा कि दो - दो भाषा का राष्ट्र के टुकड़े हो रहे। आधुनिक देश केनेडा में अंग्रेजी बोलने वाले ज्यादा है लेकिन केनेडा के पूर्व में फ्रेंच बोलते है। पूरे केनेडा में ईसाई धर्म है। सुब्बाराव दोनों तरफ के शांतिकार्यकर्ताओं से मिला तो फ्रेंच बोलने वाले बोलते है , हम तो अंग्रेजी बोलने वाले के साथ नहीं रह सकते हमारा देश अलग बनेगा।

उनके प्रधान मंत्री बोले मैने मान लिया तुम्हारा अलग राष्ट्र बनाना पड़ेगा । सुब्बाराव दोनों शांति कार्यकर्ताओं से मिल और कहा दोनों शांति का कार्यकर्ता हो, ईसाई हो , कपड़े एक से पहनते हो और खाना एक सा खाते हो, भाई जी ने उनसे बोला आप फ्रेंच बोलते है, इंग्लिश बोलने में आपको की तकलीफ है। लेकिन लिपि तो एक ही है तुम्हारी। नहीं लिपि तो एक है , पर भाषा तो अलग -अलग है। सुब्बाराव

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

बोले तुम भाषा कि बात कर रहे हो लिपि एक होने के बाद भी आपका झगड़ा है । भारत देश के अंदर ऐरे - गेरे की बात छोड़ो, मेरे देश का राष्ट्रपति डॉ०ए०पी०जे० कलाम अगर अपनी मातृभाषा का एक शब्द भी बोलेगा तो मेरे देश का प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह कुछ भी नहीं समझ पायेगा। मनमोहन सिंह को या वाजपेयी जी कलाम साहब की तो तमिल मातृभाषा है। वे चकित रह गए कि क्या राष्ट्रपति की भाषा प्रधानमंत्री नहीं समझते?उन्हे हिंदी या अंग्रेजी में बोलना पड़ता है , मातृभाषा उनकी पंजाबी है , उनकी मातृभाषा तमिल। यह भारत की विशेषता है। हमारे देश में डॉ० राधा कृष्णन राष्ट्रपति बने तेलगु उनकी मातृभाषा थी । पंडित जवाहरलाल नेहरू तेलगु नहीं समझने वाले थे। वेंकटरमन बने कितने सारे बन गये । लेकिन भारत एक बना है और एक बना रहेगा। इसके लिए हम हम क्या कर सकते है ? डॉ. एस. एन. सुब्बाराव मिसाल देते थे, "पोलियो अभियान हो रहा है न ? डॉ० आता है बोलता है , माता जी तुम्हारे बच्चे को पोलियो की दवा देना है , माँ बोलती है - अरे। मेरा बच्चा तो हट्टा - कट्टा है , बीमार नहीं है , इसको क्यों दवा पिलाते हो , तो डॉ० को समझाना पड़ता है , माता जी हट्टे - कट्टे बच्चे को ही पिलाने की दवा है। एक बार कोई पैर टेढ़ा हो गया, हाथ टेढ़ा हो गया तो कोई इलाज दुनिया मे नहीं है ।" [30]

उसी तरह राष्ट्रीय एकता का काम है। झगड़ा न हो , अगर झगड़ा हो जाए तो उसको आपस में सुलझा लिया जाए यह प्रयास करना चाहिए । सुब्बाराव ने प्रधानमंत्री से कहा -आपको तो एक ही इलाज सूझता है ,चाहे वह मणिपुर का झगड़ा हो या सांवरे का सभी जगह पुलिस या बंदूक भेजते हो और पुलिस का झगड़ा न हो उसके लिए कोई ट्रैनिंग मिली नहीं तो झगड़ा न हो भारत के नागरिको को ट्रेनिंग चाहिए।"[31] राष्ट्रीय एकता समिति को यह काम करना चाहिए। परिषद को यह काम करना चाहिए कि देश भर में झगड़ा न हो उसकी ट्रैनिंग होगी इसके लिए सब मिलकर सर्वधर्म प्रार्थना करे। जगह - जगह लोग इकट्ठा हो। महीने में दो बार अपनी बस्ती को साफ करे ,कुछ हो काम समाज सुधारनेके लिए वे करते जाएं। हम जहा है,वहा हमारा समाज है , कोई मोहला में है , उस मोहले में क्या क्या जरूरत है ? गरीब बस्ती कहाँ है? गन्दी बस्ती कहाँ है?वहां जाकर काम करे, महीने में एक बार करेंगे तो एक नागरिक सकती बनेगी। नागरिक शक्ति बनेगी। नागरिक शक्ति बहुत कुछ कर सकती है ।

अगर देश की एकता को बनाना है तो सामूहिक शक्ति को जरुरत पड़ेगी , लेकिन दुनिया में दो ही तरह की शक्ति को सीखा था , बंदूक की शक्ति और संदूक की शक्ति। या तो मारो और नहीं तो पैसा , लेकर, रिशवत लेकर करो। नई शक्ति का युग हमको लाना है , जिसमे न बंदूक की शक्ति चले न संदूक की चले। चले तो विचार , सत्य और न्याय की चले। यह प्रयास हम सबको करना होगा तब ही राष्ट्रीय एकता टिक सकेगी। कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत एक राष्ट्र है , हर कोने की मिट्टी बेशक अलग हो लेकिन सभी इस मिट्टी के लाल है। युवा कभी यह नहीं चाहेगे कि धर्म और जात - पात के नाम पर भाई-चारा टूटे। यही कारणं है शिविर का माध्यम से डॉ.एस.एन.सुब्बाराव युवाओं में मानवता का संदेश देते थे। वही समाज स्वस्थ कहलाएगा जहा के नागरिको को धर्म अपनाने की स्वतंत्रता हो , जिस तरह से राजनीति में बार-बार पक्ष बदलने को अच्छा नहीं माना जाता ठीक वैसे ही धर्म के साथ भी है। सुब्बाराव ने एक बार कहा था कि , "यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने ही धर्म का निष्ठा से पालन करे तो न केवल स्वयं बल्कि सारा समाज ही सुखी रहेगा।[32] सभी धर्मो की बुनियाद सत्य , प्रेम, करुणा , त्याग व सेवा ही है। उसे छोड़ हम ऊपर के स्वरूप जैसे - दाड़ी, जनेऊ , कपड़े आदि से धर्म को जोड़ते है, यही से समस्या आरंभ हो जाती है ।[33] अगर देश समानता और समान अवसर के सिद्धांत पर संचालित हो तो किसी तरफ से भारत की एकता टूटने की कोई गुंजाईश नहीं रहेगी।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

6. सुझाव:-

डॉ.एस.एन.सुब्बाराव द्वारा किये गये 'युवा शक्ति और राष्ट्रीय एकता ' के कार्यो को समझकर हमें मानव सेवा, राष्ट्र हित और नव भारत का निर्माण कर सकते है जिसमे सभी एक समान और सभी धर्मो का समान हो तभी भारत जैसे देश की राष्ट्रीय एकता बनी रहेगी।

संदर्भ एवं टिप्पण:-

1. नई दुनिया 8 फरवरी 2022 , जौरा , (मुरैना) समाचार पत्र ,
2. नई दुनिया, 6 नवम्बर 2006 , इंदौर, समाचार पत्र।
3. सिंह , गुरु देव सिद्धू , 2017 मेरी जीवन माला के मोती , नई दिल्ली पृ० -22
4.. वही .
5 . नई दुनिया , 6 नवम्बर 2006 , इंदौर, समाचार पत्र।
6 . निर्दलीय प्रकाशन, 8 फरवरी 2018 , भोपाल समाचार पत्र।
7. पाण्डेय, अजय कुमार , 2020 , यादे चम्बल की (डॉ एस एन सुब्बाराव) नई दिल्ल, पृ० -7
8. वही.
9. निर्दलीय भोपाल, 21 जुलाई 2017 , भोपाल, समाचार पत्र पृ० -5
10 . वही .
11 निर्दलीय भोपाल, 8 फरवरी 2018 ,भोपाल , समाचार पत्र , पृ० -8
12 . वही .
13. दैनिक जागरण वाराणसी, 1986, वाराणसी समाचार पत्र
14 .दैनिक नवज्योति, 14 जून 2017 जयपुर, समाचार पत्र
15. युवा शक्ति विचार, 2004 ' डॉ एस एन सुब्बाराव ' एक युगान्तर व्यक्तित्व , मासिक पत्रिका , नई दिल्ली पृ० -2 16 . सिंह, गुरु देव सिद्धू , 2017 मेरी जीवन माला के मोती , नई दिल्ली पृ० -114
17 .निर्दलीय भोपाल, 29 / 10 / 2021 , भोपाल व नई दिल्ली , समाचार पत्र।
18 . सिंह, गुरु देव सिद्धू , 2017 मेरी जीवन माला के मोती , नई दिल्ली पृ० -52
19 . नागर, महेन्दर, 2013, my pain speaks, A Collection of Spontenteous & Awakining thought of Dr . S .N . Subbrao ,Varansasi , P . 9
20 . निर्दलीय भोपाल , 9 / 02 /2018 , भोपाल , समाचार पत्र पृ० -8
21 . कुलश्रेठ , संदीप , 26 / 09 /2018 , सद्भावना -2018 ,(डॉ एस एन सुब्बाराव) उज्जैन पृ० -16
22 . वही .
23 . वही .
24 . वही .
25 . वही . पृ० -17
26 . डॉ एस एन सुब्बाराव, 2009 सदभावना - 2009, उज्जैन, पृ० -35
27 . वही . पृ० -22
28 वही .
29 . वही .
30 . वही .
31 . वही .
32 . दैनिक जनसत्ता , 21 /11 /2008, उज्जैन , समाचार पत्र।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, Nov 2022

33 . अमर उज्जाला, 8 / 02 /2009 , आगरा , समाचार पत्र।